eISSN:2581-4885
DEV SANSKRITI
VISHWAVIDYALAYA
PUBLICATION

PERSPECTIVE ARTICLE

यज्ञ प्रयोजन में सुसंस्कारिता का समावेश

बंदना कुमारी [1], पीयूष त्रिवेदी [2]

[1] शोध विद्यार्थी, मनोविज्ञान विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, भारत
[2] विभागाध्यक्ष, वैज्ञानिक अध्यात्म विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, भारत

*CORRESPONDENCE *Address* Bandana Kumari Research Scholar, Department of Psychology, Dev Sanskriti Vishwavidyalaya,Haridwar
Email bandanaroshanraj@gmail.com

PUBLISHED BY
Dev Sanskriti Vishwavidyalaya Gayatrikunj-Shantikunj Haridwar, India

OPEN ACCESS
Copyright (c) 2022 Bandana Kumari and Piyush Trivedi
Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

सारांश: संस्कारों की संस्कृति ही भारतीय संस्कृति का मूल है। जन्म के समय मनुष्य कि स्थिती हमेशा नर पशु जैसी ही मानी गयी है लेकिन जब वो अपने अंदर संस्कारों का समावेश करता है तथा उसकी रीति–नीति को अपनाता है तब जाकर वह मनुष्य बन पाता है और इसी पद्धति को संस्कार पद्धति का नाम दिया जाता है। किसी भी वस्तु का महत्व उतना ही है जितना उसकी सुंदरता उभारने वाली कलाकारिता और कुशलता की है। यज्ञ जैसे महान कार्य को बडे आदर पूर्वक, सावधानी, तथा पवित्रता के साथ किया जाना चाहिये। यज्ञ के प्रयोजन में भूमि शोधन संस्कार, साधनो का पवित्रिकरण, यजमान का शुद्धिकरण तथा यज्ञाग्नि संस्कार आदि सभी संस्कारो को बडे भाव के साथ करना चाहिये तब जाकर महत्वपुर्ण लाभों की प्राप्ति कराता है। गीता में आधे अधुरे और लापरवाही से किये गये यज्ञ को 'तामस यज्ञ' कहा गया है। इस शोध पत्र के माध्यम से यज्ञ प्रयोजन में सूक्ष्म संस्कारो की प्रविधियों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जा रहा है।

कूट शब्द: सुसंस्कारिता, यज्ञ–प्रयोजन, पवित्रता

प्रस्तावना

सुसंस्कारिता अध्यात्म विज्ञान के आधार पर भाव संवेदना एवं चेतन ऊर्जा द्वारा किया गया अनुप्रणित है। जिसकी मदद से सामान्य चेतना विहिन पदार्थों को भी चेतन तथा दिव्य क्षमता संपन्न बनाया जा सकता है। शास्त्रों में भगवान को भी 'यज्ञ पुरुष' कहा गया है और इस देव प्रयोजन में हर वस्तु को संस्कारित करना अनिवार्य होता है। भूमि, जल, अग्नि, शयन, जागरण आदि सभी को संस्कारवान बनाने की विधि व्यवस्था आधारित है जो नित्य कर्म विधि है। इस पूरे प्रयोजन में हर छोटी से छोटी चीजों को भी संस्कारवान बनाया जाता है। यह देखने में तो काफी साधारण लगता है पर इसके परिणाम महान होते हैं। जिस प्रकार रोज घरो की सफाई करना आवश्यक है ठीक उसी प्रकार देव प्रयोजन में हर छोटी से छोटी चीज की शुद्धिकरण करना आवश्यक होता है। प्रसाद, प्रतिमा, यज्ञ, पंचामृत, आदि का भौतिक मूल्य अत्यंत तुच्छ होता है। इसे भावनात्मक प्रयोग प्रक्रिया द्वारा उत्तम बनाया जाता है इसे ही अभिमंत्रित कहते हैं [1]। इसमें जितना महत्व मंत्रोच्चारण का होता है, उतना ही भाव पक्ष का भी होता है तब जाकर ये सभी चिजे देव प्रयोजन योग्य बनती है । हम मनुष्यों को भी पुरे जीवन काल में 16 बार संस्कारित करने की अति प्रभावी संस्कार प्रक्रिया है, जिसमें कुसंस्कारों को हटाकर उसके स्थान पर सुसंस्कार की स्थापना करने की विशेष उपचार प्रक्रिया की जाती है जो पुंसवन से लेकर अंत्येष्टि तक गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जात–कर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, यज्ञोपवीत, वेदारंभ, केशांत, समावर्तन, विवाह, तथा अंत्येष्टि है। पुंसवन से लेकर अंत्येष्टि तक प्रत्येक में हवन अनिवार्य रूप से आवश्यक है। कुछ में तो उसी की प्रधानता है, अग्नि को साक्षी देकर ही प्रतिज्ञाएं पूर्ण होती हैं चार से सात भांवरे परीक्रमा उसी की वर–वधू मिलकर करते हैं। मरण के उपरांत हिंदू का शरीर यज्ञाग्नि में होमा जाता है। चिता विशुद्ध रूप से अंत्येष्टि–यज्ञ है [2]। जिस प्रकार संस्कारों, अनुशासनो के बाद मनुष्य को एक नर पशु से देव मानव बनाया जाता है उसी प्रकार यज्ञ–प्रयोजन में संस्कारों और भाव पक्ष को शामिल कर उसे दिव्य बनाया जा सकता है। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से यज्ञ प्रयोजन में संस्कारिता के नियमो पर प्रकाश डालने की कोशिश की गयी है।

यज्ञ का स्वरूप

यज्ञ वैदिक जीवन एवं वैदिक साहित्य का अविभाज्य अंग है। यज्ञ संस्कृत की यज धातु से बना है। इसके तीन अर्थ हैं: देव–पूजा (देवत्व), संगतिकरण (संगठन) और दान। सामन्यतः अग्नि को दी गयी भेंट अथवा देवता को उद्देश कर अग्नि के माध्यम से किया गया दान यज्ञ है [3]। यज्ञ में मंत्र, कर्म, साधना एवं भावनाओं का अधिनियम रहता है, हर छोटे बडे उपकरणो या कर्मकांड के साथ अखण्ड रूप से जुडा होता है। मंत्र द्वारा भावपुर्वक वाणी से उच्चारण किया जाता है। इसका परिणाम यह होता है सुक्ष्म जगत में भावनात्मक प्रवाह उत्पन्न करता है। यदि इस प्राण–प्रतिष्ठा का अनादर किया जाये तो यज्ञ में होमी जाने वाले पदार्थों का प्रतिफल न के बराबर होगा।

यज्ञ संस्कार

भूमि–शोधन संस्कार

जिस भूमि पर यज्ञ किया जाता है या यज्ञ की वेदी या कुंड बनाया जाता है उस भूमि का भूमि–शोधन संस्कार किया जाता है। महर्षि देवल के अनुसार अशुद्ध भूमि के तीन प्रकार हैं: अमेध्य, दुष्ट एवं मलिन। जहां प्रजनन हो, किसी की मृत्यु हो या जलाया जाए या जहां कुकर्मी रहे या दुर्गंध युक्त वस्तुएँ आदि इक्कट्ठा हों उसे अशुद्ध घोषित किया जाता है। उन्होंने बताया कि इस भूमि की शुद्धि पांच प्रकार से खनन, दहन, अवलेबल, मिट्टी से भर देना और पर्जन्य वर्षण इन पांचों द्वारा अनुपयुक्त भूमि की शुद्धि की जाती है [4]। महर्षि वशिष्ठ के अनुसार कठोर भूमि अशुद्ध से शुद्ध करने के लिये गोबर से लिपने, जोतने से शुद्ध हो जाती है। किसी अशुद्ध तरल पदार्थ से भीगी हुई भूमि किसी अन्य स्थान से शुद्ध मिट्टी मिलाकर ढक देने से, अशुद्ध पदार्थ को हटा देने से शुद्ध हो जाती है [4]। वामन पुराण के अनुसार पृथ्वि की शुद्धि खोदने, जलाने, झाडु से बुहारने, लीपने गायों को भुमि के ऊपर चलाने, जल छिडकने और घर की शुद्धि झाडु से बुहारने, जल को छिडकने तथा पुजा आदि से होती है [5]।

साधनो का शुद्धिकरण

यज्ञ कार्य में उपयोग होने वाले उपकरणों को खरीदने के बाद सर्वप्रथम उन्हे संस्कारित किया जाता तत्पश्चात उपयोग किया जाता है। हर यज्ञ में उपयोग करने से पहले इन उपकरणो को अग्नि संस्कारित किया जाता है। महर्षि मनु के अनुसार यज्ञकर्म में यज्ञ के पात्रों को हाथ से धोने से पवित्र हो जाते हैं। चमस और ग्रहपात्र वगैरह गरम जल से धोने पवित्र होते हैं। अन्न और वस्त्र का बहुत ढेर हो तो जल छिडकने से पवित्र होता है। चमडा, चटाई आदि वस्त्रों के समान और शाक–मूल–फलों को अन्न के समान पवित्र करना चाहिये। रेशमी, ऊनी वस्त्रों को रेह से, कम्बल को रीठ से, सन के वस्त्र बेल की गूदी से, अलसी आदि के वस्त्र सफेद सरसो से पवित्र होते हैं। शंख, सींग, हड्डी और हाथीदांत के पदार्थ, सफेद सरसो, गोमूत्र और जल से पवित्र होते हैं। लकडी, घास वगैरह जल छिडकने से, घर–लीपने से, मिट्टी के बर्तन आग में रखने से शुद्ध होते हैं [5]। आचाराअध्याय के अनुसार यज्ञ के कामों में पात्रों की शुद्धिकरण दाहिने हाथ से कुशा द्वारा सफाई करनी चाहिए [6]।

यजमान का पवित्रिकरण

यज्ञ प्रयोजन में स्वच्छता और सुसंस्कारिता से ही यज्ञ देव प्रयोजन योग्य बनती है और यज्ञ में उपयोग होने वाले प्रत्येक

वस्तु विधि व्यवस्था के साथ–साथ यजमान के शुद्धिकरण का भी ध्यान रखा जाता है। यजमान को अभिमंत्रित जल से नहाने (दश–स्नान) पद्धति के अनुसार सुसंस्कारित किया जाता है तथा ब्राह्मणोचित दिनचर्या अपनाने वाले पुरोहित द्वारा ही यज्ञ कार्य संपन्न कराना चाहिये [7]।

यज्ञाग्नि संस्कार

शतपथ के अनुसार 'यज्ञो वै विष्णु' श्रुति में यज्ञ को निश्चित रूप से विष्णु ही माना गया है। ऋग्वेद के आरम्भ में यज्ञ को मार्गदर्शक, पुरोहित, सद्गुरू क़े रूप में बताया गया है। वेद वांग्मय में जितना महत्व यज्ञ विद्या और यज्ञाग्नि पर डाला गया है उतना किसी और का नहीं [8]। यज्ञ में उपयोग की जाने वाली अग्नि को अग्निहोत्री शास्त्रों में 'अहिताग्नि' नाम से सम्मानित किया गया है। आव्हानीय (व्यक्तिगत), गार्हपत्य (पारिवारिक), दक्षिणाग्नि (विश्व कल्याण) के लिए इन तीनों अग्नियों का यज्ञ में उपयोग किया जाता है। यज्ञ प्रयोजन में पवित्र अग्नि का उपयोग किया जाता है। माचिस का प्रयोग नहीं किया जाता है क्योंकि माचिस में फास्फोरस जैसी अनउपयुक्त चीजों का सम्मिश्रण रहता है, इसमे पूर्व संस्कार सम्मिलित हो जाते हैं। अरणी मंथन का तरीका अग्नि प्रज्वलन के लिए है इसमें पीपल के सूखे काष्ट में एक ओर गड्ढा और दूसरी ओर शंकू निकालते हैं। दही मथने की तरह इसे दबाव देते हैं इस मंथन से जो चिंगारियां निकलती है उन्हें रुई में लेकर उपयोग में लाते हैं पर अभी यह तरीका अभ्यास में नहीं रहने के कारण चुंबक और लौह आदि का उपयोग किया जा सकता है। यज्ञाग्नि व्यक्ति एवं समुचे वातावरण पर अपना प्रभाव डालती है तथा उन्हे शक्तिसम्पन्न बनाती है। इसके अलावा आतिशी शीशे पर सूर्य किरणों को एकत्रित करने से भी वास्तविक अग्नि उत्पन्न हो सकती है। यज्ञ की वेदी के चारो कोनों पर चार जल पात्र रखे जाते हैं जिससे उत्पन्न होने वाली कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा उन जल पात्रों में अवशोषित हो जाए [7, 9]।

निष्कर्ष

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि यज्ञ का पूर्ण प्रतिफल प्राप्त करने के लिये यज्ञ प्रयोजन और सुक्ष्म संस्कारों तथा सभी व्रत अनुबंधो को परिपूर्ण होना आवश्यक है। इस मर्म के विस्मृत होने पर यज्ञ का महत्व न के बराबर हो जाता है। यज्ञ के प्रयोजन में संस्कारिता, भूमि–शोधन संस्कार, साधनों का पवित्रिकरण, यजमान का शुद्धिकरण तथा यज्ञाग्नि संस्कार आदि से ही यज्ञ देव प्रयोजन बनता है तथा समयानुसार महत्वपूर्ण लाभों की प्राप्ति कराता है।

Compliance with ethical standards Not required.
Conflict of interest The authors declare that they have no conflict of interest.

References

[1] Brahmavarchas, editor. Yagna-Prayojan me Susanskarita ka Smavesh, In: Yagna ka Gyan Vigyan (Pt. Shriram Sharma Acharya Vangmay 25). Second Edition, Akhand Jyoti Sansthan Mathura; 1998.

[2] Brahmavarchas, editor. Shodash Sanskar-Vivechan (Pt. Sriram Sharma Acharya). Second Edition Akhand Jyoti Sansthan Mathura; 1998.

[3] Durasth Shiksha Nirdeshalay, Maharshi Dayanand Viswavidyalay ,In: Vadik Ritual Text paper-IX (Option-D), Rohtak-124 001.

[4] Brahmavarchas, editor. Yagna-Prayojan me Susanskarita Ka Smavesh, In: Yagna Ka Gyan Vigyan (Pt. Shriram Sharma Aacharya Vangmay 25). Second Edition, Akhand Jyoti Sanstham Mathura; 1998: Page 5.74.

[5] Geeta Press, Gorakhpur, (Srimad Daupaya Muni Vedvyas). Sri Vaman Puranam, No. 2074, 11th Reprint chapter, 14/67.

[6] Nawal Kishor Vidyalay, Lucknow, M. L. Bhargava, B. A, at the Nawal Kishor Press, Manusmriti or Manavadharma Shastra,(Pandit Girija Prasad Dvivedi); 1917

[7] Brahmavarchas, editor. Yagna-Prayojan me Susanskarita ka Smavesh, In: Yagna ka Gyan Vigyan (Pt. Shriram Sharma Acharya Vangmay 25). Second Edition, Akhand Jyoti Sansthan Mathura; 1998: Page 5/75.

[8] Brahmavarchas, editor. Gayatri aur Yagya ka Annyoyasrit Sambandh (Pt. Sriram Sharma Aacharya) Second Edition, Yug Nirmar Yojana Press, Gayatri Tapobhumi, Mathura; 2013: Page 2.

[9] Brahmavarchas, editor. Yagna-Prayojan me Susanskarita ka Smavesh, In: Yagna ka Gyan Vigyan (Pt. Shriram Sharma Acharya Vangmay 25). Second Edition, Akhand Jyoti Sansthan Mathura; 1998: Page 5/74, 75.